श्रीहरिः ।

श्रीमद् गोस्वामी
श्रीगोकुलनाथजी
महाराज
संस्थान बड़ा मन्दिर
बम्बई

www.vallabhacharya-agrahara.org

(on-line base for advanced research in Shastras)

Forthcoming Publication

नृसिंहविजयमहानाटकम्

on

www.vallabhacharyakrupa.org

नृसिंहविजयमहानाटकम्

धर्मे नास्ति भयं क्वचित् ।

नृसिंहविजयमहानाटकम्

भक्तवत्सल-श्रीनृसिंह-भगवान्

(श्रीनृसिंह भगवान् के प्रसिद्ध चित्र की अनुकृति।)

(चित्रकार - झगडुजी, मोटा मन्दिर - मुम्बई)

श्रीबालकृष्णो जयति।

।। श्रीमन्महामन्दिराखण्ड-हरिमय-विद्वद्गुरुपरम्परायै नमः।।

जगद्गुरु-श्रीमद्-वल्लभाचार्य-विद्यालक्ष्मी-संवर्धन-सङ्कल्पः

जगद्गुरु-श्रीमद्-वल्लभाचार्य-वंशावतंसानां
पू. पा. गो. १०८ श्रीअनिरुद्धलाल-महाराजानाम्
आज्ञया प्रकाशितं

विद्याविलासिभिः ब्रह्मसूत्रवृत्त्याद्यनेकग्रन्थकर्तृभिः श्रीजीवनजीमहाराजैः
प्रणीतं

नृसिंहविजयमहानाटकम्

विशेषानुग्रहः
जगद्गुरु-श्रीमद्-वल्लभाचार्य-वंशावतंसाः पण्डितप्रकाण्डाः
पू. पा. गो. १०८ श्रीश्याममनोहर-महाराजाः
(विले पार्ले-किशनगढ़)

✻ *प्रकाशकम्* ✻

श्रीगोवर्धनेश-प्रकाशन-मण्डलम्
(मुम्बापुरी)

प्रथम-संस्करणम् : श्रीवल्लभाब्दः ५३४ - वि. सं. २०६८ - 2011 C.E.

प्रति-संख्या : ५००

निःशुल्कवितरणार्थम्

सम्पादकः : **गोस्वामी गोकुलनाथः (मन्दारकुमारः)**

Śrīnṛsiṁhavijaya-mahānāṭakam : Composed by H. H. Shri Jiwanji Maharaja (the then Reigning Religious Head) of the Holy Seat of Mahaprabhu Shrimad Vallabhacharya - Brihanmandiram - Mumbai. The edition of this work is prepared on the basis of two manuscripts belonging to Pandit Shri Gattulalaji Research Centre, Mumbai - India.

पत्रप्रेषणसङ्केतः :

Shri Govardhanesh Prakashan Mandal

Administrator : Shri Bipinbhai Shah
Shop No. 40, 1st Bhoiwada,
H. H. Shri Gokulnathji Maharaj Lane,
Mumbai - 400 002.
email : vedagaana4@yahoo.com

मुद्रक :

Pratha Prints

Nathalal Bhuvan, 3rd Floor,
133, V. P. Road, Mumbai - 400 004.
Ph. : 09167339603
email : ccgnik@gmail.com

।। श्रीबालकृष्णाय नमः ।।

श्रीजीवनजी महाराजश्री (मोटा मन्दिर - मुम्बई)

नानाचराचरमपूर्वविचारधर्म-
कर्माकृतिप्रभृतिभी रचयन् विचित्रम् ।।
वाचामगोचरपदं पदमिन्द्रियाणां
दूरं विहाय जयति श्रयति स्म देवः ।।१।।

(श्रीअभिनव-वैद्यनाथस्य कस्याश्चित् अप्रकाशित-रचनायाः मङ्गलाचरणम् ।)

अप्राकृतनिखिलधर्मयुक्त सगुण साकार आनन्दमय रसात्मक विविधरसास्वादन चतुर गोपीजनवल्लभ श्रीबालकृष्ण की परब्रह्मत्वेन विरुद्धधर्माश्रययुक्त गोपीजन को प्रकृष्ट हर्ष प्रदान करने वाली फलरूप लीलाओं का चिरवाञ्छित षट्स्तबकात्मक-बालकृष्णचम्प्वाख्य प्रबन्ध (सटीक) को विद्वज्जन के समक्ष प्रस्तुत करने का महद्भाग्य कुछ समय पहले ही हमें प्राप्त हुआ था। विद्याविलासी ब्रह्मसूत्रवृत्त्यादि अनेक ग्रन्थकर्ता श्रीजीवनजी महाराज द्वारा विरचित श्रीबालकृष्णचम्प्वाख्य प्रबन्ध की प्रचारानुक्रमण प्रक्रिया में पूज्य श्रीजीवनजी महाराजश्री द्वारा प्रणीत शास्त्रोत्तेजक, वैष्णवभाव प्रचुर तथा भक्त्युत्कर्षक 'नृसिंहविजयमहानाटक' को इदंप्रथमतया प्रकाशित करना इस कार्य से संलग्न गुरुचरणाज्ञानुवर्ती सेवा-भावना-बद्धपरिकर अनुयायियों के लिए परब्रह्मसिद्धान्तवक्ता मूलाचार्यों के सिद्धान्तों के अध्ययनोत्सव तथा अवगाहनोत्सव का *दोहरा मण्डान है ।

मंत्रोपदेष्टृतया (गायत्री मन्त्र) गुरु तथा धर्मपितृचरण श्रीगोवर्द्धनेशजी महाराज मोतीवालों के द्वारा लब्धानुग्रह श्रीमद्बालकृष्णचरणपङ्कजपरागपरिष्कृतमस्तक श्रीगोकुलोत्सव-तनूद्भव श्रीजीवनजी महाराजश्री का प्रादुर्भाव वि.सं. १८५९ (द्रष्टव्य-श्रीवल्लभवंशवृक्ष प्रथम/६ गृह-बम्बई-बड़ा मन्दिर) में सौराष्ट्र के मोरबी नगर में हुआ था ।

---

*श्रीलालन की सेवा प्रणालिका पर आधारित श्रीबालकृष्णप्रभु (बृहन्मन्दिर-मुम्बई) के सेवाक्रमानुसार श्रीजीवनजी महाराजश्री के जन्मोत्सव (व्रज मार्गशीर्ष सुद ५) पर सेवाप्रकार द्विगुणित रहता है जिसे साम्प्रदायिक परिभाषानुसार दोहरा मण्डान कहा जाता है ।

जीवनेति प्रसिद्धस्य जगन्नाथाह्वयस्य मे ।।
मार्गशीर्षे सिते पक्षे पञ्चम्यां भौमवासरे ।।७२।।

रसवसुगजधरणीमितविक्रमवर्षे मयूरमय्यां वै ।।
पुरि हालारे देशे जन्माभूद्रात्रितुर्ययामे च ।।७३।।

(श्रीजीवनजीमहाराज-विरचिता महानुभावसद्रत्नमालिका ।)

इतिहासप्रसिद्ध है की श्रीगोवर्द्धनेशजी महाराजश्री के सकलसद्गुणाकर सेवारसिक श्रीविट्ठलेशसञ्ज्ञ औरस पुत्र थे ।

.....

अस्यात्मजः प्रसिद्धः सौन्दर्यौदार्यधैर्यधृक् सुज्ञः ।।
श्रीविट्ठलेशसञ्ज्ञः सद्गुणविद्यानिधिः कलाकुशलः ।।६८।।

श्रीविट्ठलावतारो भक्ताधारोऽतिदुर्ल्लभां भक्तिम् ।।
दिशति स्वीयजनेभ्यः सर्वार्थस्याभिसिद्धये कृपया ।।६९।।

श्रीमन्नवनीतप्रिय उद्भटभावेन सेवितस्तेन ।।
यः श्रीविट्ठलसेवकवाघाजीक्षत्रियस्य गृहे आसीत् ।।७०।।

महात्मनोऽस्याप्रतिमस्य चाहं
धर्मानुजो धर्मसुतोऽस्मि तस्य ।।

गोवर्द्धनाख्यस्य सदेशिकोऽपि
शिष्योऽस्मि तेनास्य गुरोः कृपाब्धेः ।।७१।।

(श्रीजीवनजीमहाराज-विरचिता महानुभावसद्रत्नमालिका ।)

श्रीविट्ठलेशजी के युवावस्था में ही नित्यलीलाप्रवेश करने के पश्चात् कालान्तर में श्रीगोवर्द्धनेशजी महाराजश्री ने सेवानुरागी, सकलशास्त्रनिष्णात तथा प्रखरभक्त श्रीजीवनजी महाराजश्री को धर्मपुत्र-उत्तराधिकारी (गादीपति) घोषित किया था । श्रीगोवर्द्धनेशजी महाराजश्री ने मूलस्थान-यतिपुर (जतिपुरा) से महाप्रभु श्रीमद् वल्लभाचार्य के सेव्य श्रीबालकृष्णलाल को मुम्बई में पधराकर श्रीमद् वल्लभाचार्य केन्द्र की प्रतिष्ठा की थी । उपरिकथित शुभावसर पर श्रीगोवर्द्धनेशजी महाराजश्री ने पत्रदूत द्वारा महाराष्ट्र के रत्नागिरि

जिले के कशेली नामक ग्राम के शास्त्रविज्ञ श्रीरघुनाथ शर्मा को आमन्त्रित करके उन्हें आस्थान व्यास के गौरवपूर्ण पद पर नियुक्त किया था ।

ग्रामेऽल्पे यः कशेल्यां समजनि रघुनाथाभिधः पूर्वजो मे
तं प्राकार्य प्रपूज्य न्ययुजदिह कथावाचने यः सुविद्यम् ।।
किञ्चिज्ज्ञस्तस्य सोऽयं प्रवितरति महादेवनामा प्रपौत्रः
श्रीमद्गोवर्द्धनेशाङ्घ्रिषु कुसुमततिं भावपूर्णान्तरङ्गः ।।२३।।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकुलावतंस-श्रीगोवर्द्धनेशजी-महाराजानां
तदाश्रित-व्यास-महादेवेन विरचितं चरित्रगानं समाप्तम् ।

(अप्रकाशितम्)

श्रीरघुनाथ शर्मा के वंशज श्रीगोकुलनाथजी महाराजाज्ञानुवर्ती श्रीमहादेव (श्रीअच्युत शर्मा-आस्थान विद्वान-बृहन्मन्दिर) ने श्रीजीवनजी महाराजश्री के चरित्रगान (त्रयोविंशति-पद्यात्मक लघुकाय अप्रकाशित ग्रन्थ) में आपश्री की प्रचण्ड प्रतिभा के विषय में कईं ऐतिहासिक तथ्य प्रकट किये हैं । अतः उक्त ग्रन्थ के सार की चर्चा इस प्रसङ्ग पर आवश्यकतया वाञ्छनीय है ।

श्यामल, तेजस्वी, दयार्द्रोभयनेत्रकमल, प्रसन्नवदन, भगवच्चिह्न-सम्प्रदायमुद्रादि-चिह्नित-विग्रह तथा आचार्योचित-जप-तप-स्वाध्याय-निरत अत्यन्त शान्त स्वरूप श्रीजीवनजी महाराज स्वाभाविक रीत्या भक्तजनों के हृदय को अपनी ओर आकर्षित करते हैं ।

रूपं ते चातिहृद्यं सुतिलकलसितं दर्शनीयं सुशान्तं
स्नेहापूर्तं दरार्यङ्कितमथ भुजयुङ्मूर्धवक्षःस्थलेषु ।।
गौमुख्यां कोमलाङ्गुल्यभिधृततुलसीमालमामुच्य पाणिं
सन्मन्त्रं सञ्जपन्तं नवजलदसमाभासमुन्मीलिताक्षम् ।।३।।

बृहन्मन्दिर की स्थापना होने के पश्चात् औरस पुत्र श्रीविट्ठलेशजी के सहसा नित्यलीलाप्रवेश करने पर एकाकी श्रीगोवर्द्धनेशजी अविकृत हृदयपूर्वक अपने प्राणाधार श्रीबालकृष्णजी के सेवाक्रम को निभाते रहे ।

पुत्रे लीलां प्रविष्टेऽप्यविकृतहृदयो बालकृष्णेऽतिहृद्ये
भावं तत्तो विशिष्टं विदधदनलसोऽलौकिकं निर्विशेषम् ।।
कुर्वन् वात्सल्यसेवां परमफलमिति स्वेन संलालयानो
वित्तैः स्वीयैरनल्पैरथ निजवपुषा चानिशं चेतसापि ।।१५।।

(श्रीगोवर्द्धनेशजी-महाराजस्य चरित्रगानम् ।)

तदनन्तर श्रीबालकृष्णजी का सेवाक्रम अव्यवहित रूप से आचार्योक्तप्रकारानुसार सानन्द चलता रहे एतदर्थ आपश्री ने विलक्षण तथा असाधारण प्रतिभायुक्त श्रीगोकुलोत्सवात्मज श्रीजीवनजी महाराज को शास्त्रीय पद्धत्यनुसार गोद लिया था ।

सेवासन्धानसिद्धयै त्वमिह किल वृतो दूरयित्वेतरान्स्वान्
प्रेक्ष्य त्वल्लक्षणानि त्वहमहमिकया स्पर्धमानान् स्वकुल्यान् ।।
श्रीमद्गोवर्द्धनेशः प्रविशदमतिभिस्तत्समालोच्य चित्ते
स्वीयाभीष्टप्रपूर्त्यै व्रजपतिचरणाम्भोजसंलुब्धचित्तः ।।४।।

(श्रीजीवनजीमहाराजस्य चरित्रगानम् ।)

रत्नपरीक्षक-सङ्ग्राहक, स्थूलविग्रह परन्तु श्रीबालकृष्णजी की सेवा में प्रमादरहित चपलगतिपूर्वक उपस्थित रहने वाले श्यामस्वरूप महाराजश्री ने श्रीगोवर्द्धनेशजी महाराज तथा श्रीगोकुलोत्सवजी महाराज के कुशल मार्गदर्शन में अध्यापयितृ-गुरु तथा श्रीवल्लभवर्त्मवादविशिष्ट ग्रन्थों के अभिज्ञोत्तम श्रीवैद्यनाथ शास्त्री (पायगुण्डे) के पास सकलशास्त्र का अभ्यास किया था । विद्वज्जनाश्रयदानदक्ष महाराजश्री ने व्याकरण, न्याय, मीमांसादि शास्त्रों का प्रगल्भाभ्यास करते हुए सकलशास्त्रों में प्रावीण्य प्राप्त कर लिया था । मूलाचार्यों के अनुग्रह से विद्वत्सदस् में निरन्तर चलने वाले पूर्वोत्तरपक्षचर्चा प्रसङ्गो में सक्रियरूप से सम्मिलित होने पर प्रकाण्ड विद्वानों के प्रचण्ड शास्त्रार्थ के तटस्थ मध्यस्थ निर्णायक होने की श्रमसाध्य महाशक्ति प्राप्त की थी । अविरत विद्वन्मण्डली को सम्बोधित करने के अभ्यास से आपश्री की वाणी से अभूतपूर्व ओजस्विता प्रकट होती थी ।

प्रावीण्यं सर्वशास्त्रेष्वधिगतमतुलं श्रीगुरूणां प्रसादात्
वैदुष्यं चाप्यतुल्यं समजनि विदुषां पण्डितानां प्रसङ्गात् ।।

प्रागल्भ्यं चाप्यपूर्वं व्यलभत सदृशैश्चर्चया शास्त्रविज्ञै-
रोजस्वित्वं च लब्धं स्ववचसि सततं संसदासेवनैश्च ।।७।।

(श्रीजीवनजीमहाराजस्य चरित्रगानम् ।)

प्रकृत महानाटक की प्रस्तावना में महाराजश्री के सङ्गीत की गुरुपरम्परा का संक्षिप्त वर्णन मिलता है । अतः इस प्रसङ्ग पर आपश्री के सङ्गीतज्ञ होने के विषय में कुछ रुचिकर बातों का उल्लेख करना स्पृहणीय बन जाता है । शास्त्राभ्यास के साथ ही साथ गान विद्या तथा वीणा वादन (एवम् अन्य तन्तुवाद्य सितार एवं दिलरुबा) में भी आपकी सिद्धहस्तता प्रख्यात थी । तदुपरान्त विशालकाय महाराजश्री के तोषखाना में सङ्गृहीत आपश्री की एक बृहदाकार मृदङ्ग के दर्शन तो प्रस्तुत लेखक ने भी किये हैं । अतः बृहन्मन्दिर के वरिष्ठ आचार्यमहानुभावों के निजसङ्ग्रह में बिराजमान गुणीजनों के समक्ष सितार तथा वीणावादन करते हुए पूज्यश्री के चित्र, उपरिलिखित अंश के आह्लादजनक पूरक प्रमाण हैं ।

भक्तिरसपूर्ण ''श्रीबालकृष्णजी का धोल पद'' (गुर्जरभाषा) में श्रीजीवनजी महाराजश्री ने भक्तप्रवर आचार्यबालक श्रीगोवर्द्धनेशजी को अनुपम भक्ति के भूप कहकर सम्बोधित किया है । ऐसे श्रीगोवर्द्धनजी के द्वारा सौंपी गई श्रीबालकृष्णजी की सेवा को ही उन्होंने अपना सर्वस्व तथा परमकर्त्तव्य माना था । श्रीमद्बालकृष्णचरणपङ्कजपरागपरिष्कृतमस्तक महाराजश्री भक्ति के आवेश में इस बात की पुष्टि उपरोक्त धोलपद के उपसंहार में उद्घोषपूर्वक कर रहे हैं ।

करुणानिधि मारा प्रभु एवा रे ।।
सदा आपी मने चरणनी सेवा रे ।।
नित निजलीलानुं सुख लेवा ।।३१।।

(श्रीबालकृष्णजी का धोलपद ।)

स्वाध्याय-जप-सेवादि प्रवृत्ति में ही व्यापृत महाराजश्री की श्रीकृष्णभक्तिमय जीवनचर्या का उल्लेख करना भक्तजनों के लिये निश्चित ही उपकारक सिद्ध होगा ।

वयसः कर्मणोऽर्थस्य श्रुतस्याभिजनस्य च ।।
वेषवाग्बुद्धिसारूप्यमाचरन्विचरेदिह ।।१८।।

(मनुस्मृति-चतुर्थाध्यायः।)

गृहस्थ ब्राह्मण को अपनी वय, कर्म, धन, शास्त्र (विद्या) तथा कुलपरम्परा के अनुकूल वेष, वाणी तथा तदनुसार बुद्धि का उपयोग करके लोक में विचरण करना चाहिए । शास्त्र की आज्ञा के परिपालन की अमिट छाप ही जहाँ निरन्तर प्रकट होती हो ऐसी पूज्य महाराजश्री की प्रेरक तथा अनुकरणीय दिनचर्या का प्रस्तुत प्रकार से उल्लेख मिलता है । यथा

नित्यं श्रीबालकृष्णप्रभुपदनिकटे संवसन् श्लक्ष्णचित्तः
प्रातर्देवप्रबोधादि च समयमनुक्रम्य माङ्गल्यसेवाम् ।।
शृङ्गारैः संविभूष्य प्रतिदिनमथ तं प्रेङ्खगं दोलयित्वा
भक्ष्यं भोज्यं तथान्नं विविधरसयुतं प्रार्पयद्राजभोगे ।।११।।

(श्रीजीवनजी-महाराजस्य चरित्रगानम् ।)

वे सदा श्रीबालकृष्णलाल के चरणों के समीप निवास करते थे तथा श्रीबालकृष्ण के चरणारविन्दयुगल की सेवा में ही आसक्त रहते थे । आपश्री नियमितरूप से शङ्खनाद होते ही श्रीप्रबोधानन्तर मङ्गला आरती पहोंच के श्रीचरणों को नित्यनूतन शृङ्गार धराते थे । वे यशोदोत्सङ्गलालित श्रीबालकृष्णप्रभु की ही विशिष्टाज्ञानुसार अत्यधिक वात्सल्यपूर्वक पलना झुलाकर पलना मन्दिर में से श्रीविग्रह को भोगमन्दिर में पधराते थे और षड्रसात्मक विविध सामग्री बहुमूल्य पात्रों की पङ्क्तियों में सुसज्जित कर भोगमन्दिर में (तुलसी समर्पण, शङ्खोदक तथा धूप-दीप द्वारा) राजभोग समर्पित किया करते थे ।

भोगान्ते चाचमय्य प्रभुमथ वरसिंहासने प्रापयित्वा
ताम्बूलं चाथ हृद्यं परिमलबहुलं तुष्टिदं सन्निवेद्य ।।
आदर्शं दापयित्वा सुविमलमथ नीराजनं संविधाय
स्वारामार्थं च देवं स्वनुसृतमकरोन्मन्दिरप्रान्तरेषु ।।१२।।

वे नियमित समयानुसार राजभोगानन्तर शुद्धोदक से प्रभु को आचमन-मुखवस्त्र कराकर वीटिका समर्पित करते थे, तदनन्तर भोगमन्दिर में से श्रीविग्रह को निज मन्दिर में स्थापित वरसिंहासन पर पधराकर पानीयपात्र (झारीजी) तथा परिमलबहुलयुक्त (केसर, कस्तूरी तथा बरासादि युक्त) ताम्बूल पधराकर राजभोग की सेवा करते थे । श्रीबालकृष्णजी को सुविमल मुकुरदर्शन करा कर श्रीराजभोगारार्तिकार्या के उच्चारणपूर्वक नीराजनविधि से

प्रभु की सेवा पहुँच कर अनवसर कराते थे ।

नित्यं संध्यागृहे स्वं निगमनिगदितं कर्म सन्धाय शुद्धं
पाकागारे स्वजायाकरकमलकृतक्वाथिसूपौदनानि ।।
आदौ श्रीबालकृष्णार्पितघृतपरिपक्वान्नजातप्रसादैर्-
विप्रान् सम्भोज्य भुङ्क्ते सुमधुरमतुलं भोजनं सम्प्रसादम् ।।१३।।

(श्रीजीवनजी-महाराजस्य चरित्रगानम् ।)

निरन्तर परब्रह्म श्रीबालकृष्णजी की सेवा में बिराजमान महाराजश्री लब्धावकाश होते ही संध्या कोठा में बिराजकर जप-पाठ निष्ठापूर्वक सम्पन्न करके प्रथम भोजन कराने योग्य ऐसे ब्राह्मणों को भगवत्प्रसाद से तृप्त कराकर स्वयं भोजनकोठा में पधारते थे । भोजनकोठा में आपश्री अपनी धर्मपत्नी श्रीरुक्मिणीबहुजी द्वारा स्वकरकमलों से (खासा रसोई में) सिद्ध की गई सामग्री तथा निजगृह में श्रीगोवर्द्धनधारी श्रीबालकृष्ण को निवेदित निष्प्रत्यूह भगवत्प्रसाद का उपभोग करते थे ।

विद्वज्जन की एक असाधारण कार्यनीति रही है जिसके अनुसार शास्त्राभ्यासानन्तर अधीत शास्त्रीयविषयों की पुनरावृत्ति निरन्तर करते रहना ही सर्वथा अभीष्ट है और ऐसा करने पर विद्वत्परम्परा को प्रगतिशील रखा जा सकता है जैसा कि अग्रहार की प्रवृत्ति होती है ।

शास्त्रस्य पारं गत्वा तु भूयो भूयस्तदभ्यसेत् ।
तच्छास्त्रं सबलं कुर्यान्न चाधीत्य त्यजेत्पुनः ।।

(द्रष्टव्य - पं. नथ्थुराम महाशङ्कर द्वारा रचित मनुस्मृति-गुर्जरभाष्य में से उद्धृत, प्र. ई.१९०६)

शास्त्र का साङ्गोपाङ्ग अभ्यास कर लेने पर भी अविरत पुनरावृत्तिपूर्वक शास्त्राभ्यास को दृढ करना चाहिए क्योंकि विविध-शास्त्रों में कृतभूरिपरिश्रम तो वही होता है जो शास्त्रावलोकन से कभी भी विमुख न हो जाय ।

अतः सर्वतंत्रस्वतंत्र महाराजश्री नित्य सायं काल में मन्दिर के सन्मुख प्राङ्गण (श्रीमहाप्रभु की बैठक अथवा पूर्वजों की बैठक) में गादीपति के स्थान को अलङ्कृत करते हुए पण्डित मण्डली को सम्बोधित करते थे । वे नानाविधशास्त्रवेत्ता तथा अतिबुद्धिशाली अनेक श्रोत्रियों के सङ्ग शास्त्रार्थ में उठने वाले संशयों पर लीलया प्रगल्भा चर्चा करते थे और युक्तिपूर्वक जटिल विषयों के सार को अपने हृदय में धारण करते थे ।

सायं चाथोपविश्य प्रतिदिनममले मन्दिरप्राङ्गणेऽथो
नानाशास्त्रार्थविज्ञानतिविशदमतीन् पण्डितांश्चोपवेश्य ।।
शास्त्रार्थे सन्दिहानः स्वहृदि सुहृदयैस्तैः समालोच्य युक्त्या
निर्णेयार्थान्समस्तानतिकुशलतया सञ्चिनोति स्वचित्ते ।।१४।।

(श्रीजीवनजी-महाराजस्य चरित्रगानम् ।)

आचार्यवान् पुरुष जैसे-जैसे शास्त्राध्ययन करता है वैसे ही ज्ञानोदय होता है और शास्त्र के पर्यालोचन में निरत रहने पर उसका ज्ञान सतेज होता है ।

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति ।।
तथा तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते ।।२०।।

(मनुस्मृतिः अ.४. श्लो.२०)

मासे मासे तथैकां परिषदमभिसंयोज्य विद्वज्जनानां
काणादे पाणिनीयेऽप्यथ च विविधशास्त्रेषु पारङ्गतानाम् ।।
सिद्धान्तानाचिनोति प्रविशदमतितः पूर्वपक्षोत्तरेषु
प्राच्यार्थो दक्षिणाभिः प्रविसृजति परं मानयित्वा सुतुष्टान् ।।१५।।

प्रतिमास विद्वज्जनों का आह्वान करके महाराजश्री विद्वत्परिषद् का आयोजन करते थे । इस सभा में न्याय-वैशेषिक, व्याकरण, मीमांसा, वेदान्तादि विविधशास्त्रों में विशद मति रखने वाले धीमान् भाग लिया करते थे। ऐसी विलक्षण विद्वत्सदस् में सभापति के स्थान से महाराजश्री प्रश्नमुख से पूर्वपक्ष करते थे तथा शास्त्रपारङ्गत विद्वानों से भी पूर्वपक्ष का उपस्थापन करवाते थे । तदनन्तर वे प्रस्तुत पक्षों का गहन पर्यालोचन करके स्वकीय विशदधिया उत्तरपक्ष का मण्डन करते हुए शास्त्रीय विषयों की मीमांसा करके उनमें एकवाक्यतारूपी सङ्गति प्रकट किया करते थे । इस प्रकार विद्वत्सदस् के मिष से प्राचीन परिपाटी का अनुमोदन करने वाले महाराजश्री मुक्तहस्त से विद्वानों का सत्कार करके उपसङ्ग्रह किया करते थे । अपार सम्पत्ति तथा विद्या के बावजूद निर्मल (दया-दाक्षिण्य-सौजन्य-विनय-विवेकादि-पुष्पोपशोभित) स्वभाव तथा शास्त्रनिष्ठा के कारण महाराजश्री का स्थान प्राचीन परम्परा से संलग्न प्रबुद्धजनों के लिए तीर्थरूप बन गया ।

भूम्नः कालेऽनुकूलेऽभ्युपचयबहुले वैभवं वर्धयिष्णुर्-
नूत्नान्याभूषणानि प्रतिदिनमनुलक्ष्योत्सवान् स्वर्हितानि ।।
आदर्शागारसौधाद्यपि पुरटसमुन्नाहरम्यं नवीनं
सेवायां सन्न्ययुञ्जत् ह्युपकरणचयं चापि नूत्नं विधाय ।।१७।।

(श्रीजीवनजी-महाराजस्य चरित्रगानम् ।)

अभ्युपचय होने पर आपश्री दीर्घकाल पर्यन्त काशी बिराजे और उन्होंने श्रीबालकृष्ण की सेवा के वैभव का विस्तार करने के हेतु से सेवोपयोगी साहित्य का निर्माण करवा के निज सेव्य प्रभु की सेवा में विनियोग करवाया था ।

ऐसे श्रीबालकृष्णचरणैकतान महाराजश्री द्वारा शोभायमान श्रीमदाम्नायाऽऽम्नात-सदाम्नाय श्रीपुष्टिमार्गसम्प्रदायप्रवर्तकाखण्डभूमण्डलाचार्यजगद्गुरुश्रीमद्वल्लभाचार्य का सोत्सेध शास्त्रीय परम्परानुसार संरक्षणस्थान सहजतया आस्तिक समाज में अभिभूति प्रकट करता है । अतः इतिहासकार क. रघुनाथजी के अधोलिखित....

No. 154 Jivan Lalji Maharaja's Mandir

.....It is the private property of Jivan Lalji Maharaj. .... Gokul Ashtami utchhav is annually celebrated in this temple on a very grand scale. The mandir stands at the head of all the mandirs in Bombay.

(The Hindu Temples of Bombay - 1896 - 1900, Republished by Shri Phiroz Ranade & Smt. Neelima Kulkarni, Dhananjay Karyalaya, Mumbai in 2004.)

शब्दों में वास्तविक रूप से न तो सोत्प्रास होने की कोई कृत्रिमता भासित होती है और ना ही तात्त्विकरूप से अपमृषित होने का प्रदूषण दिखलाई पडता है !

अत एव भक्तिप्रातिभज्ञानयुक्त सत्सिद्धान्तबोधविग्रह श्रीजीवनजी महाराज के विषय में अधोलिखित पद्यद्वय अद्भुत प्रकाश डालते हैं ।

गानाचार्यानुरोधादतिकठिनतरां रागरागिण्युपेतां
नित्यं व्यासङ्गतश्च प्रगतिमुपगतां गानविद्यामुपार्ज्य ।।
तां चायुङ्क्ते स्म नित्यं प्रतिसमयमथ श्रीपतेः कीर्तनेषु
साफल्यं येन जन्तुर्निरतिशयमियात्स्वीयसञ्जीवनस्य ।।८।।

श्रीजीवनलालजी महाराजश्री ने गायनविद्या के आचार्यों के पास रहकर राग-रागिणी

सहित अतिशय कठिन ऐसी गानविद्या का सम्पादन किया था और उस विद्या का नित्य व्यासङ्ग करके उसमें उत्तम प्रावीण्य प्राप्त किया था । वे सङ्गीत के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धि और कुशलता का प्रतिसमय श्रीबालकृष्णलालजी की नित्य कीर्तन की सेवा में विनियोग करते थे । पूज्य महाराजश्री के लिए जीवन में प्राप्त की गई वस्तु अथवा विद्या का भगवत्सेवा में उपयोग करना ही समूचे जीवन का चरमोत्कर्ष था । आपश्री की ऐसी उन्नत और निःशङ्क विचारशृङ्खला थी ।

वाचां सञ्जीवनं तं निजवचनसुधाप्यायिताशेषपुष्टं
नानाविद्याविभूषं रसिकजनपरानन्दनं गानवाद्यैः ।।
ध्यात्वा श्रीजीवनं तं प्रवितरति महादेवशर्मा नितान्त-
कृष्णप्रेमामृताब्धिप्लुतसुमनिचयं तत्पदोरच्युतोऽयम् ।।२३।।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकुलकौस्तुभ-श्रीगोकुलोत्सवजीसुत-श्रीजीवनलालजी-महाराजानां चरित्रगानं समाप्तम् । गानकर्ता व्यास-श्रीवासुदेवतनयो महादेवशर्मा ।

भक्तोद्धारपरायण महाराजश्री का ध्यान करते हुए अत्यन्त नम्र व्यास महादेव शर्मा श्रीकृष्णप्रेमरूपी अमृतसागर के जल से आर्द्रार्द्र इन त्रयोविंशति पुष्पों की श्रद्धाञ्जलि भावपूर्णरूप से आपश्री के समक्ष समर्पित करता हूँ ।

[कृपासागर श्रीजीवनजी महाराजश्री की यह गौरवगाथा प्रस्तुत लेखक ने श्रीगोकुलनाथजीमहाराजाज्ञानुवर्ती परम्परागत आस्थान विद्वान द्वारा लिखित प्रामाणिक स्रोत (पांडुलिपि) के आधार पर प्रकाशित की है । इस खण्डत्रयात्मक पांडुलिपि में श्रीगोवर्द्धनेशजी महाराजश्री, श्रीजीवनजी महाराजश्री तथा श्रीगोकुलनाथजी महाराजश्री के चरित्रगान के रूप में अज्ञातपूर्व साम्प्रदायिक ऐतिह्य उपलब्ध हुआ है । उक्त अप्रकाशित ग्रन्थ की पांडुलिपि पू.पा.गो. १०८ श्रीअनिरुद्धलालजी महाराजश्री के निजसङ्ग्रह में सुरक्षित बिराजमान है जिसे सम्पूर्णतया नूतन कलेवर में प्रकाशित करने का आपश्री का मनोरथ है ।]

नृसिंहविजयमहानाटक के रचयिता श्रीजीवनजी महाराजश्री का लघु-परिचय उपरोक्त प्रकार से प्रस्तुत करने का नम्र प्रयास किया है । शास्त्रसम्पन्न, घनपण्डित महाराजश्री का उपर्युक्त परिचय यावत्प्राप्य प्रमाणमूलक अंश पर आधारित है । अतः श्रीजीवनजी

महाराजश्री का यह प्रमाणमूलक प्राञ्जल परिचय, पूज्यश्रीचरणों की गुरुपरम्परा की महानता का आभास मात्र जिसे है ऐसे प्रस्तुत लेखक के द्वारा, यहाँ विरमित होता है ।

श्रीबालकृष्णलालजी की कृपा से चार वर्ष पहले एकाएक प्रस्तुत ग्रन्थ की दो मातृका पण्डित श्रीगट्टुलालाजी के ग्रन्थागार में हमें प्राप्त हुईं । आश्चर्यान्वित उत्साह के साथ इस महानाटक की Press copy तैयार करना प्रारम्भ किया । अन्य प्रकाशन परियोजनाओं के साथ ही साथ यह कार्य जङ्घालतया चलता रहा । श्रीजीवनजी महाराजश्री की अभिव्यक्ति की प्रौढ़ि का अनुभव भी शीघ्र होने लगा था । अतः ग्रन्थ को सम्यक्तया योजित करने में विद्वान श्रीगिरिशभाई जानी ने अत्यधिक परिश्रम किया और यह स्पष्ट हो गया कि यह कार्य जङ्घालतया तो हो ही नहीं सकता था । भगवत्कृपा से ही आज यह कलात्मक कृति पुस्तकाकार ले रही है और भाविकजनों को आनन्द प्रदान करेगी ।

सघन वाल्लभमत में गहनप्रवेशहेतुतया यह युक्तियुक्त कलात्मक रचना निश्चित ही गुणीजनों के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है । यहाँ उल्लेखनीय वस्तु यह है कि दो आदर्श मातृकायें जो हमें प्राप्त हुई हैं उनमें प्राकृत भाषा का अंश मात्र प्रारम्भ में प्राप्त हुआ है । अन्यत्र 'संस्कृतमाश्रित्य' इस प्रकार से इङ्गित करके संस्कृत में संवाद प्राप्त हुए हैं वो भी ऐसे अवसरों पर जहाँ प्रचलित परिपाटी के अनुसार प्राकृत भाषा में संवाद होने की पूर्ण सम्भावना है । अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि मूलमातृका में प्राकृतभाषा के संवाद भी लिखे गये होंगे, जो प्रस्तुत प्रकाशन की आधारभूत मातृकाओं में प्राप्त नहीं होते ।

प. पू. पितृचरण श्रीअनिरुद्धलालजी महाराजश्री (बृहन्मन्दिर-मुम्बई) के जन्मदिवस (माघ शुक्ल ६) के उपलक्ष्य में कार्यान्वित परियोजनानुसार बृहन्मन्दिराधीश्वर श्रीजीवनजी महाराज विरचित 'श्रीनृसिंहविजयमहानाटक' के इदंप्रथमतया मुद्रणावसर पर अत्यन्तानन्दानुभूति हो रही है । आपश्री के वचनामृत के अनुसार ''मोतीवाले श्रीगोवर्द्धनेशजी महाराजश्री के रत्नभण्डार में से प्रथम 'श्रीबालकृष्णचम्प्वाख्य प्रबन्ध' रूपी गजमुक्ता प्राप्त हुई और अब 'श्रीनृसिंहविजयमहानाटक' रूपी मरकतमणि ।'' पूर्वाचार्यों के इस सेवाकार्य में महानुभावों के अनुग्रह से संलग्न होने पर हम धन्यता का अनुभव कर रहे हैं । यह आदरपूर्वक उल्लेखनीय है कि प. पू. श्रीश्याममनोहरजी महाराजश्री ने प्रसन्नतापूर्वक प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशनार्थ बहुमूल्य मार्गदर्शन प्रदान किया है । भक्तवत्सल श्रीनृसिंह भगवान् का सुन्दर चित्र प्रकाशनार्थ महोदारतापूर्वक अ. सौ. श्रीमती जयलक्ष्मी तैलङ्ग

महोदया ने पधरा दिया अतः आपश्री को सादर प्रणाम । इस कार्य से संलग्न पू. पितृचरण के सेवक तथा मुद्रक (श्रीजयन्तभाई शाह तथा श्रीनिकुञ्ज शाह) सब ही के प्रयास प्रशंसनीय हैं ।

भक्तैक-हृदयङ्गम श्रीबालकृष्णलालजी की कृपा सम्पादनार्थ श्रीवैद्यनाथ शास्त्रीजी के द्वारा की गई स्तुति को दोहराते हुए अपनी इस भावाभिव्यक्ति को यहीं विराम देते हैं....

दिशि दिशि बहुरत्ना सर्वसस्या धरित्री
भवतु कविजनानां कीर्त्तिहंसीप्रचारः ।।
दिशतु विमलभक्तिं श्रीशदेवो निजानां
चरणनलिनयुग्मासक्तिचिन्ताकुलानाम् ।।१८।।

व्रज भाद्रपद कृष्ण पक्ष १४
श्रीकाका-वल्लभजी को उत्सव
वि. सं. २०६८

गो. गोकुलनाथः

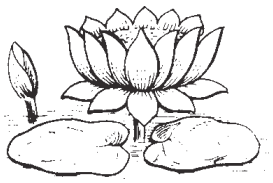

अस्माकं संस्कृत-प्रकाशनानि

१. श्रीमन्महाप्रभूणां जन्मपत्रिका

२. महानुभावसद्रत्नमालिका (श्रीजीवनजी-महाराज-विरचिता)

३. शिक्षामुक्तावली (श्रीजीवनजी-महाराज-विरचिता)

४. श्रीमत्प्रभुचरणानां जन्मपत्रिका

५. श्रीकृष्णचन्द्राष्टकम् (श्रीकेवलराम-विरचितम्)

६. अग्निहोत्रप्रयोगः (आपस्तम्बीयः)

७. विश्वप्रकाशानुक्रमणिका (श्रीविश्वनाथ-रचित-विश्वप्रकाशग्रन्थान्तर्गता)

८. श्रीगट्टुलालावर्यस्य लघुजीवनचरितम्

९. गीतगोविन्दार्थः (गोस्वामि-श्रीमद्विट्ठलनाथ-विरचितः) (अप्राप्यः)

१०. लघुस्तोत्रसरित्सागरः

११. The Mahamandir Sanskrit Series Vol. I (प्रहस्तवादः सविवृतिः)

१२. The Mahamandir Sanskrit Series Vol. II (पण्डितकरभिन्दिपालवादः)

१३. तैत्तिरीयशाखानुसारि - १) त्रिकालसन्ध्या २) ब्रह्मचारिणां होमः ३) ज्येष्ठाभिषेकः (सान्द्रमुद्रिका-सहिताः) (प्रकाशकः गीत-सङ्गीत-सागर-न्यासः)

१४. तैत्तिरीय-संहिता (का. ३, प्र. १-२) (सान्द्रमुद्रिका)
(प्रकाशकः गीत-सङ्गीत-सागर-न्यासः)

१५. तैत्तिरीय-शाखायाः मूलग्रन्थाः (४ - MP3 सान्द्रमुद्रिका-सहिताः)
(सहयोगि-संस्था : वेदप्रसारसमितिः)

१६. The Mahamandir Sanskrit Series Vol. III
(माण्डूक्यदीपिका तथा कठोपनिषद्भाष्यम्)

१७. वेत्रस्य श्लोकाः

१८. बालकृष्णचम्प्वाख्यः प्रबन्धः (श्रीजीवनजी-महाराज-विरचितो नासिकनिवासिखाडिल्करोपनामात्माराम-(अपा)-शास्त्रि-प्रणीत-टीका-सहितः)

१९. भागवतपुस्तक-षोडशोपचार-पूजनविधिः (प्रकाशकः गीत-सङ्गीत-सागर-न्यासः)

२०. तैत्तिरीय - ब्रह्मयज्ञः (प्रकाशकः गीत-सङ्गीत-सागर-न्यासः)

२१. www.Vallabhacharyakrupa.org
✤ तं श्रीबालहरिं भजे ।
✤ श्रीबालकृष्णचम्प्वाख्यः प्रबन्धः

२२. www.Vallabhacharya-agrahara.org

अस्माकं वैद्यकीय-प्रकाशने

१. बालक संरक्षण पर कुछ महत्त्वपूर्ण सलाह (डॉ. गिरीश सोनी B.H.M.S.)

२. Lessons From The Grand Rounds (For Office Practice)
Authors - Dr. Y. K. Amdekar & Associates.

अस्माकं लोकभोग्य-प्रकाशनानि

१. દિવ્યપ્રકાશ

i શિક્ષાપત્રનો તત્ત્વસાર

ii શ્રીજીવનજી મહારાજ વિરચિત ઘોળ પદો તથા શ્રીયમુનાચતુષ્પદી શ્રીગટ્ટુલાલાજીના ટિપ્પણ સહિત.

२. સૂઆ(શુક)ની વાર્તા (संस्करणद्वयं - बालानां कृते ।)

३. ભક્તરત્નદ્વય (संस्करणद्वयं - बालानां कृते ।)

४. હરિકો ભજૈ સો હરિ કો હોય (संस्करणद्वयं - बालानां कृते ।)

५. શ્રીયમુનાજીનાં નવાખ્યાન

६. तुलसीमालाधारणवादः (श्रीपुरुषोत्तमजी-कृतः व्रजभाषा-गुर्जरभाषाटीका-समेतः ।)

७. श्रीगोकुलाधीशजी के २५ वचनामृत (संस्करणद्वयं व्रजभाषायाम् ।)

८. શ્રીમટ્ટુજી મહારાજશ્રીનાં ૩૨ વચનામૃત

९. पुष्टिकलादर्शन - स्मारिका (गीत-सङ्गीत-सागर-न्यासः)

१०. Vallabhadigvijaya - An interactive animated CD-Rom on the life of Mahaprabhu Shrimad Vallabhacharya

११. कृष्णरसामृत - अष्टछाप संगीत CD (गीत-सङ्गीत-सागर-न्यासः)

१२. नादरस (गीत-सङ्गीत-सागर-न्यासः)

१३. શ્રીનાથજી સુહામણા

१४. www.Vallabhacharyakrupa.org

- ✤ મંગલવાદ્યમ્ - માદલની વધાઈ (જન્માષ્ટમી)
- ✤ Beautiful Birds from Vrajbhoomi (a photographic study)
- ✤ Nathadwara School of Art
- ✤ શ્રીનાથજી સુહામણા
- ✤ उत्सव निर्णय (व्रजभाषा)
- ✤ Feathered Friends From Vraj
- ✤ Vraj Darshan
- ✤ Taalchakram (E-tuitions for the Pakhawaj)

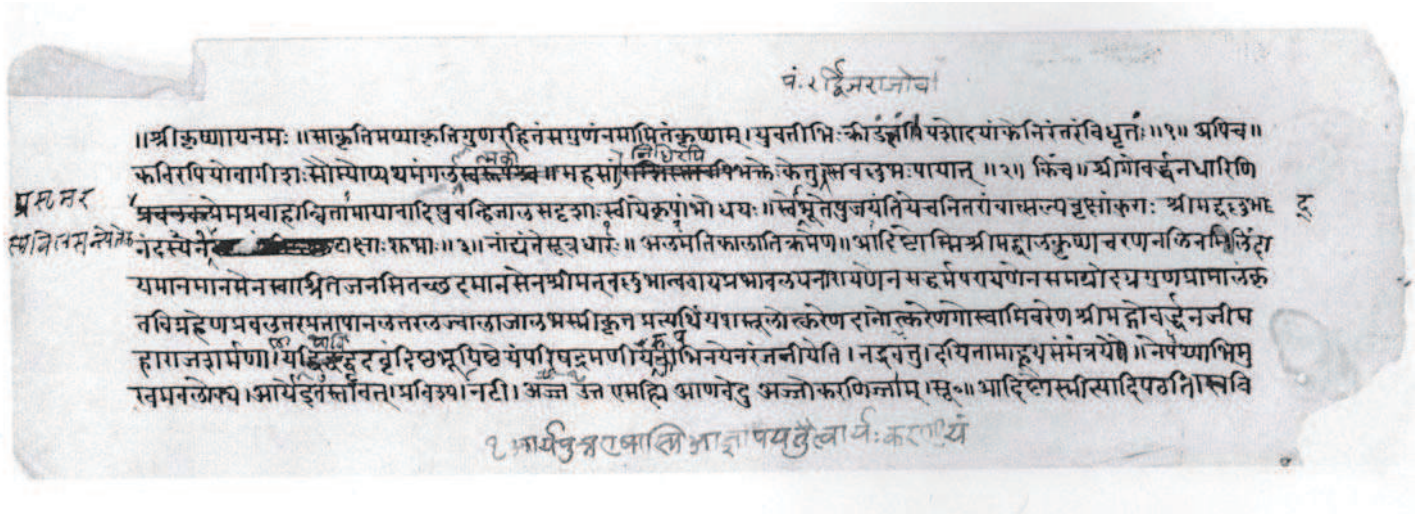

एकस्याः मातृकायाः आद्यं पत्रम् ।

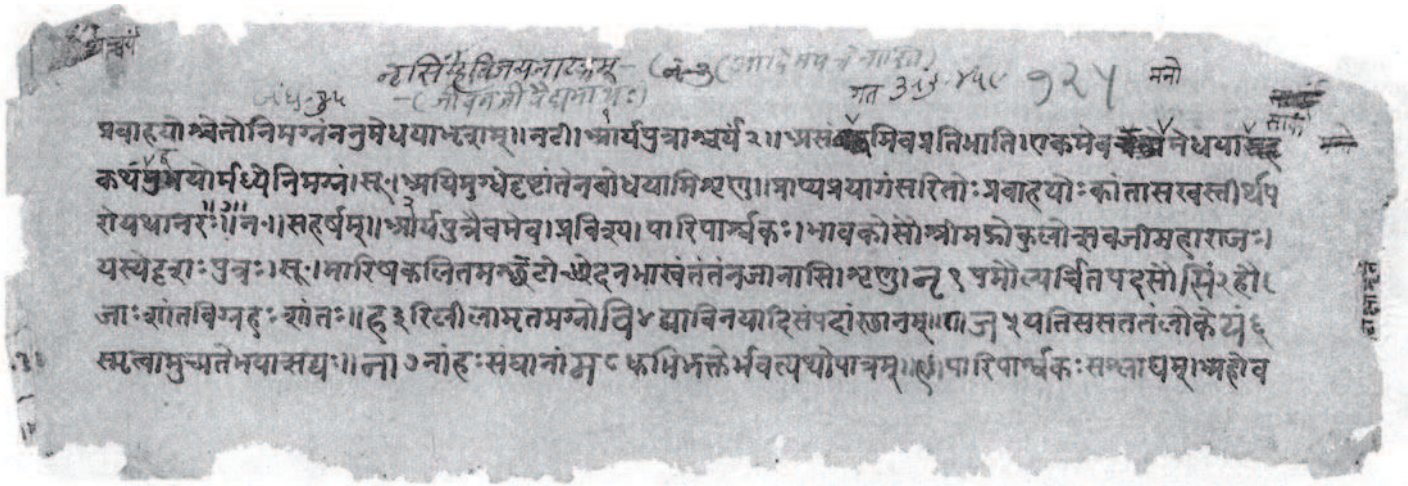

प्रथमपृष्ठविरहितायाः अन्यस्याः मातृकायाः द्वितीयं पत्रम् ।

अनुक्रमणिका

प्रथमोऽङ्कः । १

द्वितीयोऽङ्कः । ११

तृतीयोऽङ्कः । २६

चतुर्थोऽङ्कः । ४२

पञ्चमोऽङ्कः । ५५

षष्ठोऽङ्कः । ७१

सप्तमोऽङ्कः । १०३

अष्टमोऽङ्कः । १२१

नवमोऽङ्कः । १४२

दशमोऽङ्कः । १५२

पद्यानुक्रमणिका १८५